न होता प्रदूषण और रोगों का वार। करते यदि यज्ञ, पैड़-पोधों का विस्तार ।।

जीवन व जगत् की यात्रा अनादि व अनंत है।

इस यात्रा का संचालक व संवाहक तत्व पुण्य है व पुण्य का आधारभूत तत्व यज्ञ है, इसलिए वेदों में कहा :-

अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभि :

यज्ञ चराचर जड़ एवं चेतन जगत की नाभि है, केन्द्र है।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । -गीता -3.13

यज्ञ शेष अन्न को खाने वाले यजमान पापों से मुक्त हो जाते हैं।